

# **NOTES**

**Society and culture of India -II  
(1757-1947)**

**M A History (Semester -4)**

**Paper Code: 21HIS24GD3**

## **Index**

- 1. 19वीं शताब्दी के दौरान भारत में नए सामाजिक वर्गों के उदय का विवरण दीजिए**
- 2. आधुनिकीकरण पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए**
- 3. राष्ट्रवाद की व्याख्या कीजिए भारत में इसके उदय के कारण बताइए**
- 4. राजा राममोहन राय भारत में नव चेतना के प्रवर्तक तथा दूध थे विवेचना करो**
- 5. स्वामी विवेकानन्द व रामकृष्ण मिशन की उपलब्धियां का विवरण दीजिए**
- 6.. थियोसोफिकल सोसायटी तथा एनी बेसेंट पर एक निबंध लिखिए**
- 7. स्वामी दयानन्द एक धार्मिक सुधारक थे व्याख्या करें**
- 8.. अलीगढ़ आंदोलन का विस्तृत वर्णन कीजिए**
- 9.. दलितोत्थान आंदोलन में डॉ भीमराव अंबेडकर की भूमिका पर प्रकाश डालिए**
- 10. जाति व्यवस्था पर एक निबंध लिखिए**
  
- 11. भारत में ब्रिटिश राज्य की देन पर आलोचनात्मक टिप्पणी करें**

### **प्रश्न 1.19वीं शताब्दी के दौरान भारत में नए सामाजिक वर्गों के उदय का विवरण दीजिए**

**Ans** आधुनिक अर्थव्यवस्था और राजनीतिक सांस्कृतिक परिस्थितियों ने भारतीय समाज में अनेक नए वर्गों को उत्पन्न किया है वर्गों की उत्पत्ति की यह प्रक्रिया ब्रिटिश शासन काल से ही स्पष्ट प्रारंभ हो गई थी जबकि नई सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का श्री गणेश हुआ देश में नई शासन प्रणाली लागू की गई और एक धर्मनिरपेक्ष शिक्षा अर्थात् अंग्रेजी शिक्षा का विस्तार हुआ इसी के प्रश्न स्वरूप भारत में नवीन वर्गों का अभ्युदय संभव हो सका इस नए वर्गों का उदय सारे भारत में इसलिए संभव हुआ कि एक समान अंग्रेजी शासन प्रणाली संपूर्ण देश में छा गई तथा सारा देश एक सामाज्य के अंतर्गत आ चुका था देश में अनेक सामाजिक वर्ग भी उभर कर आए जो सत्ता पर अधिकार करने में असफल रहे आधुनिक भारत के प्रमुख नवीन वर्गों तथा उनकी भूमिकाओं को निम्नवत् समझा जा सकता है

**1. बुद्धिजीवी वर्ग** भारत में पाश्चात्य शिक्षा से संस्कृति के प्रभाव से विवेकानंद विज्ञान वाद जनतंत्र बाद आदि मूल्य पर आदि आदित नवीन भौतिक वर्गों का जन्म उदय हुआ जिसके अंतर्गत राजा राममोहन राय तथा उनके द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज का बौद्धिक वर्ग उल्लेखनीय है भारत में आधुनिक शिक्षा और वैज्ञानिक ज्ञान का जैसे-जैसे विस्तार होता गया इसी के साथ-साथ बुद्धिजीवी वर्ग का आकार बढ़ता गया आज भारत में शिक्षकों दार्शनिकों सामाजिक विचार कम वैज्ञानिकों शोधकर्ताओं इंजीनियरों सूचना तकनीकी विशेषज्ञों पत्रकारों आदि के एक अत्यंत बड़े बुद्धिजीवी वर्ग के दर्शन होते हैं इसी वर्ग में देश में राष्ट्रीय आता एवं स्वतंत्रता की भावना को शिक्षा के प्रसार और स्वस्थ जनमत के निर्माण के माध्यम से फैलाया बाल विवाह दहेज प्रथा पर्दा प्रथा प्रांतीयता एस प्रसिद्धता विधवा पुनर्विवाह आदि सामाजिक दुष्प्रभाव के प्रतिकूल जनमत जागृत हुआ बुद्धिजीवी वर्ग से ही महान वैज्ञानिकों साहित्यकारों दार्शनिकों इतिहासकारों समाज शास्त्रियों पत्रकारों राजनीतिकियों में अर्थशास्त्रियों का उदय हुआ जिनके द्वारा संपूर्ण राष्ट्र के नवनिर्माण की योजनाएं बनाई जा रही हैं

**2. शासन वर्ग.** स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शासक वर्ग के रूप में कांग्रेस जन भर कर सामने आए आजादी के पश्चात केंद्र और अधिकांश राज्यों में अधिकांश समय तक और समाज पर भी उनका ही शासन रहा है इस वर्ग के शासनकाल में ही विवाह और परिवार संबंधी अनेक कुरीतियों और समस्याओं का समाधान करने के लिए वैज्ञानिक रुकावटें दूर की गई इसी वर्ग ने पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा भारत के आर्थिक व सामाजिक विकास को शाखा रूप देने का प्रयास किया समाजवाद और गरीबी हटाओ जैसे नारे दिए परंतु नारेबाजी अधिक और काम काम होने से जनता की परेशानियां बढ़ती गई आज शासक वर्ग में अधिक संख्या भ्रष्ट बैर्डमान चरित्रहीन बाहुबली एवं सुविधा वीडियो को होने से जनता की परेशानी बड़ी ही जा रही है जिसे दूर करने का आधुनिक शासक वर्ग हृदय से वास्तविक रूप में प्रयास नहीं कर रहा है

**3. पूँजीपति वर्ग.** भारतीय समाज के आर्थिक क्षेत्र के अभी जाति वर्ग पूँजीपति ही हैवह बड़े-बड़े उद्योगों मिलन कारखाने चाय बागानों खानों आदि का मालिक वर्ग है जिसने सारे देश की अर्थव्यवस्था को अपनी मुट्ठी में बंद कर रखा है यही कारण है कि देश के आर्थिक क्रियाकलापों उत्पादन वितरण आदि पर इसी का एक अधिकार है

**4. श्रमिक वर्ग.** यह वर्तमान भारत का सर्वाधिक विशाल वर्ग है क्योंकि हमारी संपूर्ण जनसंख्या में लगभग 33% इसी वर्ग के सदस्य हैं श्रमिक वर्ग मेहनत का वह सर्वहारा लोगों का वर्ग है जिसके सम्मुख रोजी रोटी कमाने हेतु श्रम के अलावा कुछ भी नहीं होता है इस वर्ग के सदस्य मिलन कारबाने चाय बागानों एवं खानों खेतों खत्तिहानों दुकानों और प्रतिष्ठानों में काम करते हैं रिक्शा ठेला टैक्सी बस राज मजदूरी आदि के रूप में कार्य करते हैं आर्थिक रूप से इस श्रेणी की स्थिति बहुत ही खराब है इन्हें ने तो उचित भोजन मिलता है ने पूरे वस्त्र और उन्हें उचित निवास ही श्रमिक वर्ग के अधिकांश सदस्य गांधी मलिन बस्तियों में जानवरों की तरह रहने को विवश है रुखा सुखा खाकर किसी तरह तन को ढक कर सध्यता का उपवास करते हैं परंतु इसी वर्ग के लोग अपने खून पसीने के दम पर उत्पादन कार्य करते हैं उत्पादित वस्तुओं को धोने और लाते हैं यातायात व संचार किस को ठीक बनाए रखते हैं सरकार के अथक पर्यटन के पश्चात भी अभी तक उनकी दशा अच्छी नहीं हो पाई है

**5. कृषक वर्ग.** के श्रमिक वर्ग का ही उपभाग है किंतु भारतीय समाज के परिपेक्ष में इसका विशेष स्थान है भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी कुल जनसंख्या का करीब 65% व्यक्ति कृषक है इस वर्ग के स्वरूप और प्रकृति में पर्याप्त परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है आधुनिकरण लोकीकरण नगरीकरण यंत्रीकरण राजनीतिक कारण आदि का असर इस वर्ग के सदस्यों पर कुछ ना कुछ अंश में रहा है यही वर्क भारत की अर्थव्यवस्था की प्राण शक्ति है इस वर्ग का सदस्य एक तरफ तो अपने खेतों में आधुनिक यंत्रों प्रविधियां और चुनाव में सक्रिय भाग लेता है तो दूसरी तरफ विभिन्न संस्कारों पर फिजूल खर्ची करता है बाल विवाह करता है तथा परिवार नियोजन कार्यक्रम से दूर भगाने का प्रयास करता है

**6. व्यापारी वर्ग.** यह आर्थिक क्षेत्र का वह अभिजात वर्ग है जो उत्पादित वस्तुओं के वितरण एवं उनका क्रिया विक्रिय करता है इस वर्ग के अंतर्गत प्रमुख है थोक व्यापारी शामिल हैं जो वस्तुओं के उत्पादक और उपभोक्ता के मध्य एक कड़ी के रूप में कार्यरत हैं वर्तमान भारतीय समाज का व्यापारी वर्ग और सुविधा वादी और अत्यधिक स्वार्थी हो गया है जमाखोरी मुनाफा कोई कालाबाजारी के तीन नैतिक नियम हो गए हैं अतः मिलावट करना तथा नकली वस्तुओं का विक्रिय करना यह अपना व धर्म का या कर्तव्य समझने लगे हैं अपने आर्थिक हितों को स्वर द रक्षक या वर्ग कुछ भी कर सकता है यह वर्ग प्रचार और विज्ञापनों के जरिए से लोगों की रुचि पसंद वह फैशन को बदलने में सहायता करता है उन्हें देश-विदेश के नए-नए उत्पादों के बारे में जानकारी देता है व्यापार के नए-नए तरीकों को खोज कर नए परिवर्तनों को लाने में सहायक बनता है

**7. नौकरशाही वर्ग.** इस वर्ग से मतलब पूर्ण संगठित सरकारी कर्मचारियों से है जो सरकार के एक सफाई उनके रूप में की निरंतर शासन प्रबंध से संबंधित कार्यों को करते हैं तथा सरकार की बदल जाने पर भी उन पर कोई आज नहीं आती है नौकरशाह वर्ग एक तरह का सतरंगनात्मक संगठन है जिसका प्रमुख लक्ष्य वृहद स्तर पर प्रशासनिक कार्यों को संचालित करने के लिए अनेक व्यक्तियों और विशेषज्ञों के कार्यों में तर्कपूर्ण समन्वय करना है सरकारी सचिवालय के कर्मचारी व जिला स्तर पर जिलाधीश आदि इसी वर्ग के सदस्यों का उदाहरण है भारत में प्रशासनिक कार्यों का संचालन करने में नौकरशाह वर्ग की माहिती भूमिका है जिनकी अनुपस्थिति में प्रशासन व्यवस्था पंगु हो

सकती है यह वर्ग शासन प्रबंधन संबंधी नीतियों को व्यावहारिक रूप देकर सरकारी योजनाओं का कार्यान्वयन भी करता है

8. स्वतंत्र देश में संलग्न अभिजात वर्ग. भारतीय समाज के इस वर्ग के अंतर्गत डॉक्टर वकील कलाकार आदि शामिल हैं जो किसी भी रूप में नौकरी करने के स्थान पर कोई स्वतंत्र पैसा अपनाते हैं यह वर्ग किसी जन सेवा कार्य से संबंधित होता है और इसके अधिकांश सदस्य नैतिक नियमों को त्याग कर अधिक अधिक धनोपाजर्न करने की फिराक में रहते हैं इस वर्ग का सामाजिक महत्व अधिक है क्योंकि यह है अपने ज्ञान तथा तर्क के आधार पर अनेक सामाजिक परिवर्तन लाने में सहायक माना जा रहा है

उदाहरणार्थ .अपनी नई-नई खोजने से चिकित्सक वर्ग औषधि विज्ञान में ऐसे परिवर्तन ला सकता है जिससे असाध्याय रोगों को ठीक किया जा सके स्वतंत्र देश में संलग्न एक विशिष्ट वर्ग का भी उदय हुआ है जिसे तस्करों के नाम से जाना जाता है इस वर्ग के सदस्य चोरी छिपे सोना चांदी कपड़ा विदेशी मुद्रा एवं अन्य वस्तुओं को इस देश से विदेश एवं विदेशों से इस देश में लाते हैं तस्कर वर्ग का संगठन गोपनीय सुदृढ़ तथा सुव्यवस्थित है ईश्वर का नेतृत्व किसी समाट से काम नहीं होता कहा जाता है कि भारत में इस वर्ग ने सरकार के समानांतर अर्थव्यवस्था संचालित कर ली है इतना ही नहीं अब तो यह वर्ग नशीली वस्तुओं औरहथियारों के व्यापार से भी जु़़़ गया है वह भारत में आतंकवाद के प्रसार में सहयोगी भी माना जाता है इससे स्पष्ट है कि यह राष्ट्र विरोधी वर्ग है जिस देश को परिवर्तन की स्वास्थ्य दिशा में से पथभृष्ट किया जाता है

**निष्कर्ष.** भारत में अंग्रेजों के प्रवेश के समय भारत की सामाजिक स्थिति मुख्यतः मध्यकालीन स्वरूप वाली थी अंग्रेजों के आगमन तथा शासन पर उनका अधिकार होने के फल स्वरूप भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन हुए बुद्धिजीवी वर्ग के रूप में एक नए मध्यवर्ग का उदय हुआ जिसकी सारी आशाएं अंग्रेजों पर आधारित थी नई भू बंदोबस्त के कारण नई उम्मीद जमीदार अर्थात शहरी जमीदार का उदय हुआ जो पूरी तरह से अंग्रेजों का स्वामी भक्त था इसके अतिरिक्त नए पूँजीपति वर्ग के उदय में भी अंग्रेजों की प्रत्यक्ष भूमिका थी अंग्रेजों ने भारतीय समाज को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया था

## प्रश्न 2..आधुनिकरण पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए

**Ans.** आधुनिकरण एवं पश्चिमीकरण को सामान्य तौर पर एक ही मान लिया जाता है लेकिन दोनों प्रक्रियाएं एक नहीं हैं हां दोनों में संबंध जरूरी है आधुनिक के कारण की प्रक्रिया औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया सामाजिक गतिशीलता उच्च जीवन स्तर सभ्यता के विकास व दृष्टिकोण की विशालता आदि से संबंधित है यह सब तक पश्चिमी संसार में जन्म लेकर अन्य देशों में फैले हैं इस कारण आधुनिकीकरण को पश्चिमीकरण का परिणाम कहा जाता है यंत्रीकरण विशाल उद्योगों की स्थापना प्रौद्योगिकीय तथा प्राविधिक विकास ज्ञान एवं विज्ञान का प्रसार आर्थिक प्रगति आधुनिकीकरण के प्रमुख लक्षण माने जाते हैं

आधुनिक की करण की परिभाषाएं एवं अर्थ. इज्जतिड आधुनिकरण की परिभाषा करते हुए लिखता है ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिकीकरण सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं के उन सभी ऊंट की दिशा में परिवर्तन की

प्रक्रिया है जो 17वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका में विकसित हुए हैं और उसके बाद जिनका विस्तार अन्य यूरोपिय देशों में एक 19वीं 20वीं शताब्दियों में दक्षिणी अमेरिका एशिया और अफ्रीका के महाद्वीपों में हुआ है।

### आधुनिकीकरण की विशेषताएं

**1. औद्योगिकरण और नगरीकरण.** आधुनिकीकरण के औद्योगिकरण और नगरीकरण प्रारंभिक तत्व है आधुनिक समाजों को औद्योगिक समाज भी कहा जाता है उद्योगों की स्थापना नए उत्पादन केदों को जन्म देती है जो नगरों के रूप में विकसित हो जाते हैं वास्तव में नगरीकरण को ही लर्नर ने आधुनिकरण की प्रक्रिया का प्रथम चरण बताया है जो से समस्त विशेषताओं को प्रोत्साहित करता है ग्रामों से नगरों की तरफ जनसंख्या का संक्रमण होने से नवीन परिस्थितियों उत्पन्न होती हैं यह परिस्थितियों सहगामी जीवन की प्रेरित करती हैं शिक्षा वैज्ञानिक प्रगति गतिशीलता जनसंचार का विकास और राजनीतिक चेतना आदि आधुनिकीकरण के अन्य तत्व हैं जो नगरीकरण के बाद विकसित होते हैं।

**2. साक्षरता.** नगरीकरण एवं औद्योगिकरण शिक्षा और विज्ञान के प्रकार प्रसार में सहायक होते हैं नगरों में प्रौद्योगिकी विकास यह मांग करता है कि नगरवासी शिक्षित और तकनीकी दृष्टि से कुशल हो उत्पादन के लिए कौशल प्रशिक्षण और जिला शिक्षा की जरूरत होती है शिक्षा एक तरफ तो औद्योगिक उत्पादन में सहायता करती है और दूसरी तरफ उपभोग में वृद्धि करती है शिक्षित मनुष्यों में नवीन आशाएं एवं आकांक्षाएं जन्म लेती हैं आज आवागमन एवं संचार के साधनों का प्रयोग करने के लिए भी प्राविधिक शिक्षा की आवश्यकता होती है साक्षरता के द्वारा ही विचारों और पद्धतियों का आदान-प्रदान होता है लर्नर के शब्दों में साक्षरता मानसिक गतिशीलता में वृद्धि करती है।

**3. गतिशीलता.** वर्तमान समाज गतिशील समाज है आधुनिकरण की प्रक्रिया में गतिशीलता के भौतिक व सामाजिक सांस्कृतिक दोनों स्वरूपों का विकास होता है लोग भौतिक दृष्टि से ग्रामीण संसार को छोड़कर नगरों तथा औद्योगिक केदों की तरफ जाने लगते हैं इन स्थानों में व्यक्तिगत योग्यता और कौशल का महत्व होता है अर्जित स्थिति का मूल्य होता है अतः व्यक्ति गतिशीलता एवं निरंतर परिवर्तन आधुनिक समाजों की प्रमुख विशेषताएं बन गई हैं आधुनिकीकरण समाज के लोगों के दृष्टिकोणों तथा मानसिक प्रवृत्तियों में परिवर्तन कर देता है कर्नल ने इस परिवर्तन को मानसिक गतिशीलता कहा है यह मानसिक गतिशीलता हमें अन्य व्यक्तियों के प्रति जागरूक रखती है अर्थात हम केवल अपने ही विचारों और पद्धतियों के संकुचित दायरे में क्रियाशील नहीं होते वर्णन अन्य व्यक्तियों और समूहों के विचारों एवं जीवन पद्धतियों के साथ अनुकूल प्लान करने का प्रयास करते हैं।

**4. विवेकशीलता.** आधुनिकीकरण प्रक्रिया में मनुष्यों की विवेकशीलता में वृद्धि हो जाती है दूसरे शब्दों में विवेक कारण भी आधुनिकता का महत्व मापदंड है विवेकीकरण का मतलब साक्षात् एवं सतर्कता पूर्वक विचार करके उद्देश्य और उनके प्रति के साधनों का निश्चय करना है परंपरा यदि भाग्य पर भरोसा करती है तो आधुनिकता विवेक

पर विश्वास रखती है मनुष्य की वृद्धि एवं कर्तव्य को महत्व देना एवं इसके आधार पर पर्यावरण का नियंत्रण करके जीवन को अधिक सुविधाजनक और प्रतिवाद बनाने की इच्छा रखनी ही विवेकशीलता है

**5.. जन सहभागिता.** आधुनिकीकरण का आखिरी किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण मापदंड जनशय सहभागिता है जनसंचार के साधन आधुनिक मनुष्यों को सामाजिक जीवन की गतिविधियों में सहभागी बनने की प्रेरणा देते हैं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में उन मानवीय प्रवृत्तियों का विकास हो जाता है जो व्यक्ति को राजनीतिक जीवन में सहयोगी बनती हैं वह राजनीतिक मामलों में सक्रिय भाग लेता है जनसंचार के साधन इस तरह की सहभागिता का विकास करने में खास सहायता करते हैं नए अनुभवों और नवीन आकांक्षाओं के अभिव्यक्ति जनसंचार के साधनों के द्वारा होती है विभिन्न कार्य क्षेत्र में पारस्परिक आधार प्रदान बढ़ जाता है तो लोग एक दूसरे के निकट संपर्क में आते हैं जीवन की सामान्य समस्याओं के संबंध में विचारों का विनिमय होता है लोगों की चेतना में विभिन्न मतों की प्राप्ति होती है

**6. विभेदीकरण और प्राविधिक कुशलता.** सामाजिक विभेदीकरण तथा मनुष्य में प्राविधिक कुशलता और योग्यता का विकास आधुनिकीकरण का द्वितीय मुख्य तत्व है औद्योगीकरण और विवेकपूर्ण चुनाव की स्वतंत्रता समाज के सदस्यों का विभिन्न आधारों पर विभेदीकरण कर देते हैं स्वतंत्र चुनाव की प्रक्रिया अनेक नवीन भूमिकाओं और संस्थाओं को जन्म देती है नई-नई व्यावसायिक प्रशासनिक एवं प्राविधिक भूमिका का विकास हो जाता है और स्कूलों विश्वविद्यालयों चिकित्सालयों और नौकरशाही संस्थाओं का उदय होता है इस तरह अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार नवीनताओं का चुनाव करने की स्वतंत्रता से उत्पन्न संरचनात्मक विभेदीकरण एवं औद्योगिक क्षमता आधुनिकीकरण की जरूरी दशाएं हैं

**7. विकास का विशिष्ट स्वरूप.** आधुनिकीकरण विकास या उन्नति का पर्यायवाची शब्द नहीं है राजस्थान में आधुनिकीकरण को विकास प्रक्रिया का एक विशिष्ट स्वरूप माना है विकास प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार की प्रकार आत्मक भूमिकाओं का विशेष कारण हो जाता है यह विशेषीकरण तभी संभव है जब लोगों के मन में नई आकांक्षाएं चेतन हो जाएं और यह वह अंधविश्वास और परंपराओं की कोई जकड़न से आजाद होकर विवेकपूर्ण नई परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करने के लिए तैयार हो जाएं इस तरह विवेक कारण एवं लौकीकरण आधुनिकीकरण के नतीजे हैं अतः आधुनिकीकरण को इंटरनेट विकास प्रक्रिया का एक विशेष स्वरूप कहा है आधुनिकीकरण विकास की प्रक्रिया है जो निश्चित अवस्थाओं में से होकर गुजरती है आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का शुरू नगरीकरण तथा औद्योगीकरण से होता है

**8. इकाइयों की पारस्परिक आश्रिता.** बगैर अपने अस्तित्व की रक्षा करने में समर्थ होते हैं उनकी आत्मनिर्भरता उन्हें इस योग बना देती है कि वह स्थायित्व एवं निरंतरता प्राप्त कर लें इस समाजों में परिवार धर्म आदि आत्मनिर्भर इकाइयां हैं आधुनिकरण की प्रक्रिया सामाजिक इकाइयों की आत्मनिर्भरता को कम कर देती है

**9. सार्वभौमिक नैतिकता की वृद्धि.** लेवी के अनुसार अपेक्षाकृत आधुनिक समाजों में नैतिकता का एक सामान्य प्रतिमान विकसित हो जाता है सार्वभौमिक नैतिकता का मतलब है व्यक्तियों की प्रकारतमक योग्यता को महत्व

देना इसके विपरीत विशिष्ट नैतिकता का मतलब है व्यक्ति के विशिष्ट गुना अर्थात् धर्म परिवार या जाति आदि को महत्व देना आधुनिकीकरण की प्रक्रिया समाज में सार्वभौमिक नैतिकता के क्षेत्र में वृद्धि करती है और सामाजिक संबंधों में विस्तार कर देती है वर्तमान समाज में सबके लिए समान नियम होते हैं किंतु इसका मतलब यह नहीं की आधुनिक समाज में सामान्य नैतिकता की कमी होती है या आधुनिक समाज में नैतिकता बिल्कुल खत्म हो जाती है आधुनिक समाज में नैतिक संबंधों का विस्तार अनेक कर्म से हो जाता है मनुष्यों के पारस्परिक संबंधों की संख्या में वृद्धि विभिन्न विशेषाकृत समूह एवं भूमिकाओं के संबंध में की समस्या इकाइयों की आत्मनिर्भरता का हर्ष सामाजिक संबंधों में जटिलता पैदा कर देते हैं

**10. मानवीय संबंधों की कुशलता.** लेवी ने स्पष्ट किया है कि आधुनिक समाज में मानवीय संबंधों की अभिव्यक्ति विवेकशीलता सार्वभौमिक नैतिकता प्रकार्यात्मक विशिष्ट एवं रकात्मक प्रतिष्ठा के आधार पर होता है इसका कारण यह है कि आधुनिक की कारण शक्ति के निर्जीव स्रोतों और यंत्रों के प्रयोग में वृद्धि करता है इस काम के लिए यह जरूरी है कि मनुष्य में वैज्ञानिकता एवं विवेकशीलता का विकास हो यंत्रों और निर्जीव स्रोतों का प्रयोग जटिल संगठनों की स्थापना में सहायक होता है

**11. विनिमय के सामान्य माध्यम और बाजार.** प्रत्येक समाज में किसी ने किसी जरिए से वस्तुओं और सेवाओं का बनी में होता है वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय को सुविधा प्रदान करने वाले क्षेत्र या व्यवस्था को बाजार कहा जाता है जारी दो प्रकार के हो सकते हैं विशेष और सामान विशेष शरीर से कुछ विशेष वस्तुओं को प्राप्त किया जा सकता है जबकि सामान्य माध्यम से लगभग सभी वस्तुओं का विनिमय किया जा सकता है

**12 अधिकारी तंत्र का विकास.** आधुनिक समाज में अधिकारी तंत्र के आधार पर विभिन्न इकाइयों का संगठन होता है यह अधिकारी तंत्र या नौकरशाही सरकार ही में पंक्ति है वह गैर सरकारी संगठनों भी राज्य व्यवस्था भी अधिकारी तंत्र पर आधारित हो जाती है वो हाथी की हार्दिक अवस्था भी अधिकारी करके रख खुशी था बताते हैं लिव इट एज़ गॉड किराए की अधिकारी धन धन इस समय धनोता है जिसका निर्माण की छूट समुदायों होता है इसमें काम करने वाले लोगों के पद एवं भूमिकाएं स्पष्ट रूप से निश्चित एवं परिभाषित होती हैं

**13. एकाकी परिवार.** एकाकी परिवार के संबंध में ले भी के अनुसार आधुनिक समाज में विस्तृत या सेक्स परिवार के स्थान पर ऐसी परिवार का खास हो जाता है जिनमें पति पत्नी एवं उनके संस्थान धरती हैं दूसरे शब्दों में समाज में एक काकी परिवार पाए जाते हैं जिनकी ऊपर पति पत्नी दोनों में से किसी के भी क्षेत्र परिवार का असर नहीं होता विश्व स्वतंत्र रूप से अपने पारिवारिक जीवन की रोता करते हैं उनकी संतान भी विवाह के पश्चात इसी तरह लग परिवार की व्यवस्था कब देती है आधुनिक समाज में परिवार की काम सीमित हो जाते

**14. जन्म प्रवृत्तियों का विकास.** सामान जनता की केंद्रीय व्यवस्था पर असर का जन्न सहभागिता के फलस्वरूप आधुनिक समाज में जल प्रवृत्तियों का विकास हो गया है कि इसके कारण आधुनिक समाज की जंग समाज का नाम दिया जाता है जन्न प्रवृत्तियां की अभिव्यक्ति तब आधुनिक समाज में सब स्तर समान रूप से नहीं होती अवस्था में

यह यदा कदा होती है सर सत्तावादी अधिनायकवादी राज्यों में इस अभिव्यक्ति का पूर्ण दमन करने का प्रयास किया जाता है

**15. अंतर्राष्ट्रीय पक्ष.** यूरोप में सबसे पहले आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का प्रारंभ उन समाज में हुआ जो राजनीतिक दृष्टि से विभिन्न इकाइयां होते हुए भी सामान सांस्कृतिक विरासत रखते थे जिसके कारण उनके पारस्परिक संबंध नवीन राजनीतिक व्यवस्था में भी बन रहे आर्थिक प्रवृत्तियां और विकास और सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन भी राष्ट्रीय या राजनीतिक सीमाओं में बंधे रहे इस तरह विशिष्ट आधुनिक और श्रेष्ठ वर्गों के संबंध इन सीमाओं को पार कर गई

**16. आर्थिक विकास.** संचार व्यवस्था आधुनिकीकरण के विकास में खास सहायक कारक हैं समाचार पत्र रेडियो आदि संचार के अनेक साधनों के विकास से विचारों का आदान-प्रदान होता है विभिन्न समूहों एवं श्रेणियों को समस्याओं के संबंध में व्यवस्थित और उपयोगी विचार वर्ष के साधनों के द्वारा सामाजिक समस्याओं के निराकरण एवं सामाजिक नीतियों के निर्धारण में खास सहायता मिलती है

**17. वैचारिक परिवर्तन.** आर्थिक प्रगति और भौतिक संपन्नता यद्यपि आधुनिकीकरण की खास विशेषताएं हैं परंतु लर्नर के विचार से आधुनिकीकरण का वास्तविक आधार वैचारिक है आधुनिकीकरण का मालिक संबंध मनुष्यों के दृष्टिकोण एवं व्यवहार से है आर्थिक उन्नति आधुनिकरण का एक हिस्सा मात्र है एक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है जो जीवन के हर एक क्षेत्र में नवीन प्रणाली को प्रोत्साहित करती है

**18. पश्चिमीकरण.** लर्नर के विचार से आधुनिकता पश्चिमी जगत की देन है उसके अनुसार पश्चिमीकरण को ही एक तरह से आधुनिकरण कहा जा सकता है आधुनिक की करण की पश्चिमी स्वरूप को एक सार्वभौमिक स्वरूप माना जा सकता है आधुनिकीकरण की समाजशास्त्रीय व्यवस्था इसी प्रारूप को आदर्श मानकर की जा सकती है आधुनिकीकरण के विकास में सहायक औद्योगिकरण नगरीकरण जनसंचार एवं सहभागिता आदि की प्रक्रियाएं पश्चिमी संसार में ही विकसित हुई है

**निष्कर्ष.** भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत वास्तव में भारत में अंग्रेजों के आगमन से हुई थी अंग्रेजी शिक्षा ने इस प्रक्रिया को सकारात्मक रूप से काफी प्रभावित किया था अंग्रेजों ने बात स्वतंत्र भारत सरकार ने भी देश के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है

### प्रश्न 3. राष्ट्रवाद की व्याख्या कीजिए भारत में इसके उदय के कारण बताइए

**Ans.** 19वीं साल के धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है 19वीं साल के प्रारंभ तक भारतीय सभ्यता पश्चिमी सभ्यता से आतंकित हो गई थी भारतीय अंग्रेजी भाषा वेशभूषा साहित्य और ज्ञान को श्रेष्ठ मानने लगे थे अंग्रेज व्यापारियों के साथ ईसाई पादरी एवं धर्म प्रचारक भी भारत आए थे ब्रिटिश राज्य की स्थापना के बाद उनकी गतिविधियां जो प्रकृति गई वह हिंदू और मुस्लिम पर प्रबल आक्षेप कर रहे थे इन ईसाई धर्म प्रचार होने दो ऐसे कार्य किया जिससे भारतीयों में नई चेतना उत्पन्न हुई पहले उन्होंने भारतीयों को इसी बनाना शुरू कर दिया और दूसरा अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार प्रसार जिससे पाश्चात्य ज्ञान और विचार भारतीयों तक पहुंचने लगे

अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार के कारण लोग अपनी मूल संस्कृति भूल रहे थे भारतीय समाज में इतनी बुराइयां उत्पन्न हो गई थी कि लोग उन्हें अपने में शर्म महसूस करने लगे और हिंदू ईसाई धर्म की ओर आकर्षित होने लगे

**पुनर्जागरण का अर्थ.** 18 वीं सदी में भारत में अधिनाती दिखाई देती है इसका मूल कारण धार्मिक एवं सामाजिक जीवन की विकृतियां हैं अतः पुनर्जागरण का यह कार्य धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में प्रारंभ हुआ और बाद में इतने राजनीतिक जागरण को जन्म दिया दो जकारिया ने ठीक लिखा है भारत की पुनर्जागृति मुख्यतया आध्यात्मिक थी तथा एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप धारण करने से पूर्व किसने अनेक सामाजिक और धार्मिक आंदोलन का सूत्रपात किया

### **सुधारवादी आंदोलन के जन्म के कारण.**

**1. ईसाई धर्म का प्रचार.** ईसाई धर्म का प्रचार भारतीय जनता को जागृत करने का एक महत्वपूर्ण कारण बना क्योंकि जब हमारे सारे भारत में अंग्रेजी राज्य कायम हो गया था तो उन्होंने नौकरी आदि के लालच में गरीब जनता को इसी बनाना शुरू कर दिया इसके लिए अनेक परियों की नियुक्ति की जिस पर काफी पैसा भी खर्च किया गया इन पादरियों ने ईसाई धर्म के प्रचार के साथ हिंदू धर्म का मजाक भी उदय जब हिंदू जनता ईसाई धर्म अपनाने लगी तो हिंदू विद्वानों की आंखें खुली उन्होंने अपने धर्म के अस्तित्व को बचाने के लिए की जान एक कर दिया आर्य समाज की स्थापना इसी का परिणाम है जिसने ईसाई धर्म की कमियां उजागर करते हुए हिंदू धर्म और संस्कृति को महान बताया

**2. अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार.** भारत में अंग्रेजी राज्य स्थापित होते ही शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी कर दिया गया जिससे अनेक नवयुवकों ने अंग्रेजी भाषा में शिक्षा ग्रहण की जिसे उन्होंने भारतीय साहित्य के साथ-साथ पाश्चात्य साहित्य का भी अध्ययन किया खासकर अंग्रेजी साहित्य से उनको नई प्रेरणा मिली अब उनका दृष्टिकोण और भी व्यापक हो गया और हर क्षेत्र में सुधार के लिए एक वातावरण का निर्माण हुआ

**3. भारत का विदेश से संपर्क.** यातायात के साधनों के विकास के कारण भारतीय लोग चीन जापान जर्मनी अमेरिका सिंगापुर आदि देशों में जाने लगे जहां उन लोगों से मिलकर उनके विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन आया जिससे सुधारों के लिए लेकिन जमीन तैयार हो गई

**4. भारतीय छापाखाना और साहित्य.** छापेखाने के आविष्कार और साहित्य ने भी समाज सुधार आंदोलन को छेड़ने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की 16वीं सदी से ही छापा खाने का आविष्कार हो जाने से असंख्य पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा जिम धार्मिक तथा सामाजिक बुराइयों से जनमानस को अवगत करवाया गया शिक्षित वर्ग ने इन बुराइयों को दूर करने का बीड़ा उठाया जिससे समाज सुधारकों के लिए एक खाका तैयार हो गया

**5. प्राचीन सांस्कृतिक परंपरा का ज्ञान.** भारतीय शिक्षित वर्ग को विदेशी खासकर पाश्चात्य साहित्य पढ़ने में अपनी संस्कृति में सभ्यता की महानता का पता चला जिससे पश्चिमी जगत भी प्रभावित था बंगाल एशियाटिक सोसाइटी के अधीन कई अंग्रेज विद्वानों ने अनेक हिंदू ग्रंथों का संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद जैसे बिलियन से 1785 में गीता

का और 17 संबंध में विलियम जॉन्स ने अभिजान शाकुतलम का किया अंग्रेजी सरकार ने 1792 में बनारस और 18 से 21 में कोलकाता में संस्कृत कॉलेज खोल दिए जहां अंग्रेज भी संस्कृत भाषा को प्रोत्साहन सहित इसी कारण संस्कृत भाषा अपने चरम शिखर पर पहुँचने में कामयाब हुई इस प्रकार भारतीय जनता को अपनी संस्कृति की महानता का जान हुआ जिससे हीनता की बजाय आत्मविश्वास की भावना उनके हृदय में जागृत हुई राजा राममोहन राय दयानंद सरस्वती और स्वामी विवेकानंद जैसे विद्वानों ने भी भारतीय जनता को अपनी संस्कृति की महानता से अवगत करवाया

**6. पश्चिमी संस्कृति का प्रसार.** पश्चिमी संस्कृति के प्रचार प्रसार ने भी इन आंदोलन को चलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की अब दोनों संस्कृतियों का संपर्क हुआ तब भारतीय पश्चिमी संस्कृति विचारवाद और तर्क प्रणाली से प्रभावित हुई इसी प्रभाव से भारतीय जनता ने अपनी संस्कृति की बुराइयों को खत्म करने का निश्चय किया अब भारतीय किसी बात को तर्क के आधार पर ही स्वीकार करते थे जिससे उनके जीवन के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन की भावना जागृत हुई

राष्ट्रीय चेतना के उदय एवं विकास के कारण.

**1. विदेशी शासन का प्रभाव.**

**2. राजनीतिक एवं आर्थिक एकता की स्थापना.**

**3. 1857 ई का स्वतंत्रता संग्राम.**

**4. धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन.**

**5. पश्चिमी विचारों एवं शिक्षा का प्रभाव.**

**6. भारतीय समाचार पत्र एवं साहित्य.**

**7. जाति विभेद की नीति.**

**8. यातायात एवं संचार के साधनों का विकास.**

**9. ऐतिहासिक खोजें.**

**10. सरकारी नौकरियों में भारतीयों के साथ पक्षपात.**

**11. विदेशी घटनाओं का प्रभाव.**

**12.. लॉर्ड लिटिल की प्रतिक्रियाबादी नीति.**

**13 इल्बर्ट बिल विवाद.**

**14. प्रांतीय तथा राष्ट्रीय राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना.**

**15. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना.**

**प्रश्न 4.राजा राममोहन राय भारत में नव चेतना के प्रवर्तक तथा अग्र दूत थे विवेचना करो**

**Ans.** राजा राम मोहन राय संदीप भारतीय राष्ट्रीयता के जनक तथा आधुनिक भारत के सूत्रधार थे वास्तव में वह आधुनिक सचेत मानव थे तथा नए भारत की पूर्ण जागृत आत्मा के प्रतीक थे उनकी दूरदर्शिता तथा कल्पना शक्ति महान थी वह एक सच्चे तथा ईमानदार व्यक्ति थे एक समाज सुधारक धार्मिक सुधारक राजनीतिक विचारक तथा शिक्षा शास्त्री के रूप में उन्होंने देश की लगभग सभी समस्याओं के प्रत्येक पहलू पर अपने विचार अभिव्यक्त किया राय पहले व्यक्ति थे जिन्होंने तत्कालीन भारतीय धर्म तथा समाज में विद्यमान गुरु प्रथम तथा कृतियों को पहचान उनके कर्म की खोज की तथा उन्हें दूर करने के लिए भर्षक प्रयास किया जीवन पर्यंत वे इन कुरीतियों को दूर करने के लिए संघर्षरत रहे उन्होंने अक्सर वार्ड में आस्था प्रकट की तथा बुद्धि वादी मानवता पर बोल दिया तथा यथार्थ हिंदुवाद की पुनरावृत्ति की

राजा राममोहन राय पहले सामाजिक चिंतक से जिन्होंने भारत में नारी की दाहिने स्थिति को दूर करने तथा उसके उत्थान तथा उत्कर्ष के लिए भर्षक प्रयास किया नई से संबंधित अनेक सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए उन्होंने जीवन पर्यंत संघर्ष किया

राजनीति शिक्षा की महत्व को समझा कि स्वयं भी एक बहुत महान शिक्षावित थे जिनका 6 विभिन्न भाषाओं पर पूर्ण नियंत्रण था भारत में वे शिक्षा के प्रचार प्रसार के समर्थक थे उन्होंने पाश्चात्य वैज्ञानिक शिक्षा पद्धति के महत्व को समझा तथा उसे भारत में भी लागू करने का प्रयास किया वह भारत में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने के प्रबल समर्थक थे राय सामाजिक उपयोगिता तथा मानव कल्याण को भावना से पुत्र थे उन्होंने व्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थन किया उन्होंने जर्मींदारी प्रथा का समर्थन तो किया परंतु कास्ट कार्यों की आर्थिक दशा सुधारने पर भी अत्यधिक बल दिया

राजा राममोहन राय पहले भारतीय थे जिन्होंने निरंकुश तथा सुरक्षाचारी शासन का विरोध किया तथा संवेधानिक शासन का समर्थन किया उन्होंने शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत को अपनी स्वीकृति प्रदान की विशेष रूप से विदाई तथा कार्यपालिका शक्तियों के पृथक्करण पर विशेष फल दिया उन्होंने भारत में न्यायिक व राजस्व संबंधी पद्धतियों में भी सुधारा की मांग की राजा राममोहन राय विश्व बंधुत्व के सिद्धांत में विश्वास रखते थे वह राष्ट्रों की परस्पर सहयोग तथा विश्वास पर जोर देते थे वह मानवी समस्याओं का समाधान मानवीय विधि से करने में अटूट विश्वास सकते थे

भारतीय राजनीतिक चिंतन को राय द्वारा दिए गए योगदान का अध्ययन हम निम्न प्रकार से कर सकते हैं

1. भारतीय पुनर्जीगरण के अग्रदृत.
2. उदारवादी राष्ट्रवाद के जनक.
3. बुद्धि वाद की प्रणेता.
4. भारतीय पत्रकारिता के जनक.
5. राजनीतिक क्षेत्र में योगदान.
6. सामाजिक क्षेत्र में योगदान.

**7. धार्मिक क्षेत्र में योगदान.**

**8. शिक्षा के क्षेत्र में योगदान.**

**9. आर्थिक क्षेत्र में योगदान.**

**10. प्रेस तथा भाषण की स्वतंत्रता के जनक.**

**11. कानून तथा नैतिकता के क्षेत्र में योगदान.**

**12 एक मानवतावादी तथा अंतरराष्ट्रीय वादी के रूप में.**

**निष्कर्ष.**राजा राममोहन राय की संैद्या भारतीय राष्ट्रीयता के पैगंबर तथा आधुनिक भारत के जनक थे यदि इतिहासकारों ने उन्हें अतीत स्पष्टवादी धार्मिक नेता तथा अनुगामी राजनीतिक विचारक माना है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है एक समाज सुधारक धार्मिक सुधारक राजनीतिक विचारक तथा शिक्षाविद के रूप में उन्होंने देश की समस्याओं के लगभग सभी प्रमुख पहलुओं को छुआ तथा उनके निवारण प्रस्तुत किया यदि राजा राममोहन राय को अपने समय में बहुत सी बातों में सफलता नहीं मिली तो भी इससे उनके योगदान पर कोई पांच नहीं आई उसे अंधकार पूर्ण तथा अवसादग्रस्त युग में राजा राममोहन राय की महान सफलता इसी बात में थी कि उन्होंने देश की समस्याओं को शासन ढंग से स्पष्ट किया तथा उन्हें शासन सत्ता के क्षेत्र तक पहुंचा दिया उन्होंने देश में अभिनय दिशा में चिंतन के द्वारा द्वारा खोल दिए तथा एक ऐसा मार्ग बना दिया जिस पर भावि धर्म तथा समाज सुधारक तथा राजनीतिक चिंतक आगे बढ़ते रहे तथा राजा राममोहन राय के विचार क्षितिज को फ्लेट रहे

#### **प्रश्न 5.स्वामी विवेकानंद व रामकृष्ण मिशन की उपलब्धियां का विवरण दीजिए**

**Ans .**19वीं साड़ी का अंतिम धार्मिक आंदोलन रामकृष्ण मिशन था जिसमें हिंदू धर्म की खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से प्राप्त करने का प्रयास किया गया स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु के नाम पर 1887 इसी में द्वारा नगर में रामकृष्ण मिशन नामक संस्था की स्थापना

#### **रामकृष्ण परमहंस.**

सम रामकृष्ण परमहंस का बचपन का नाम गधा घर छोटों उपाध्याय खान का जन्म रश्मि बंगाल के हुगली जिले की कुमार रखूंगा काम में 18 सतीश मूरी गरीब ब्राह्मण परिवार साथ शिक्षा पानी में उनका कोई झुका नहीं था और आराम से ही वे साधु संगति में रहते थे जब भी 17 वर्ष के थे तब उनके सिर से उनकी पिता का साया उठ गया इस सीरवी कोलकाता में अपने बड़े भाई के पास आगए जब भी 21 वर्ष के हुई शाम उनकी भाई का हाथी की शेर से उठ गया तब भी कोलकाता के पास दक्षिणेश्वर में रास मनी द्वारा स्थापित काली देवी के मंदिर में पुजारी बन गई मिलता की साथ पूजा करती थी और काली देवी की कोमा के नाम से पुकारते ही बच्चों जैसा प्यार करती से 24 वर्ष की आयु में उनका विवाह 5 वर्ष की कन्या शारदा माई के साथ कर दिया गया विवाह के बाद भी वापस मंदिर में आ गए जहां उन्होंने 12 वर्षों तक तपस्या की सबसे पहले उनको भैरवी नामक एक संन्यासी ने दो वर्ष तक तांत्रिक साधना सिखाई बाद में वैष्णव धर्म साधना द्वारा उन्होंने श्री कृष्ण के साक्षात दर्शन किए फिर उन्होंने तोतापुरी नमक साधु से वेदांत

साधना सखी उसके बाद उन्होंने ईसाई और मुस्लिम धर्म की भी साधना की लेकिन उनकी आत्मा को संतोष प्राप्त नहीं हुआ इसी समय उनकी पत्नी शारदा मनी भी उनके पास आ गई उन्होंने उसकी मां कहकर संबोधित किया और उनकी पूजा की

लगातार साधना करते रहने से उनका शरीर कमज़ोर हो गया था लेकिन इस समय तक वे सारे भारत में प्रसिद्ध हो चुके थे भी ज्यादातर समय दक्षिणेश्वर मंदिर में ही रहते थे और वहां आने वाली जनता को उपदेश देते थे 16 अगस्त 1886 को केंसर की बीमारी से उनका स्वर्गवास हो गया

परमहंस में ने तो किसी धर्म की स्थापना की और नहीं नए सिद्धांतों का प्रतिपादन किया वे तो सरकार धाम की प्रतिमूर्ति थे कुछ विद्वानों ने तो उनका धर्म का जीता जागता स्वरूप कहा है वे हिंदू धर्म के समर्थक थे तथा निर्गुण व शगुन दोनों की उपासना की पक्षाधर थी वह मूर्ति पूजा एकेश्वरवाद बहुत देर बाद आदि में भी विश्वास करते थे उनके अनुसार सभी प्राचीन धर्म ग्रंथ पवित्र थे उनके बारे में रामधारी सिंह दिनकर जी लिखते हैं हिंदू धर्म में जो गहराई और माधुरी है परमहंस उसकी प्रतिमा थी सर से पर तक वे आत्मा की ज्योति से परिपूर्ण थे आनंद पवित्रता और पुण्य की चमक उन्हें गहरी रहती थी वह दिन-रात परमार्थ चिंतन में दिन रहते थे सामाजिक सुख समृद्धि का उनके समक्ष कोई मूल्य नहीं था

**परमहंस की शिक्षाएं.**

1. मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य ईश्वर से साक्षात्कार करना होना चाहिए
2. वेज ग्रस्त जीवन को ईश्वर की प्राप्ति में रुकावट मानते थे लेकिन उनका यह भी कहना था ग्राहक जीवन रहकर भी सच्चे मन से साधना करने पर ईश्वर प्राप्ति हो सकती है
3. विषय वासना का त्याग करने पर ईश्वर प्राप्ति हो सकती है
4. सभी मनुष्य समान हैं और सभी में सच्चिदानन्द भरा हुआ है
5. शरीर और आत्मा दो अलग-अलग वस्तुएं हैं इसको समझते हुए वह कहते हैं कामिनी कंचन की आसक्ति यदि पूर्ण रूप से नष्ट हो जाए तो शरीर अलग है और आत्मा अलग है यह स्पष्ट दिखने लगता है नारियल का पानी सूख जाने पर जैसे उसकी भीतर का खोपरा नरेटी से खुलकर अलग हो जाता है खोपरा और मराठी दोनों अलग-अलग दिखने लगते हैं वैसे ही शरीर और आत्मा के बारे में भी मानना चाहिए
6. वे शास्त्र की विरोधी थे क्योंकि उनके अनुसार ईश्वर शास्त्रार्थ की शक्ति से परे हैं इसलिए मूर्ति पूजा पुन्हा जन्म और अवतारवाद को लेकर तर्क वितर्क करने से क्या फायदा जो कुछ दिखाई देता है वह ईश्वर भाई है हमें आम खाने से मतलब है पेड़ के पते गिरने से नहीं
7. उन्होंने मूर्ति पूजा का समर्थन किया है उनके अनुसार जिस प्रकार वकील को देखते ही अदालत की याद आती है उसी प्रकार मूर्ति को देखते ही भगवान की याद आती है

8. ईश्वर की उपासना का व्यावहारिक मार्ग बताते हुए वह कहते हैं जब तुम काम करते हो तो एक हाथ से कम करो और दूसरे हाथ से भगवान के पैर पड़े रखो जब काम समाप्त हो जाए तो भगवान के चरणों को दोनों हाथों से पकड़ लो
9. एक विद्वान को सदाचार अनुशासन पूर्ण नैतिकता पूर्ण और अहंकार सुन होना चाहिए

**रामकृष्ण परमहंस की देन.**

**1. अद्यातवाद**

**2. सभी धर्म में एकता स्थापित करना.**

**3. मानव सेवा करना.**

**रामकृष्ण परमहंस से मिलन.** जमुना पहली बार नरेंद्र नाथ पर मन से मिले तो उनके विचारों में भिन्नता थी क्योंकि रामकृष्ण जय हिंदू आदि थे वहीं नरेंद्र पश्चात विचारों से प्रभावित थे लेकिन बाद में दोनों के मिलन से उनके जीवन में परिवर्तन आ गया जब नरेंद्र ने रामकृष्ण से पूछा कि क्या आपने ईश्वर को देखा है तो उत्तर मिला हाँ मैं ईश्वर को वैसे ही देखता हूं जैसे तुम्हें देखता हूं तुम भी चाहो तो उसे देख सकते हो और आगे कहां की आज तक मैं संसार में देखा है कि कोई व्यक्ति अपने पिता के लिए कोई पत्नी के लिए तो कोई मां के लिए रो रहा है लेकिन ईश्वर के लिए रोते किसी को नहीं देखा रामकृष्ण के इस कथन से नरेंद्र बहुत प्रभावित हुए जब दूसरी बार उनकी परमहंस से भेंट हुई तो उन्होंने अपना दया पर नरेंद्र के शरीर पर रखा किसी से नरेंद्र को जो आनंद प्राप्त हुआ उसके बारे में उन्होंने लिखा है आंखें खुली होने पर मैंने दीवारों सहित सारे कमरों को सुनने में विलीन होते देखा मेरे व्यक्तित्व सहित सारा ब्रह्मांड ही एक सर्वव्यापक रहस्यमई सुनने में लुप्त होते दिखाई पड़ा इसके बाद नरेंद्र ने रामकृष्ण को अपना गुरु बनाया गुरु ने उनको मानव सेवा का आदेश दिया जिसका नरेंद्र ने आजीवन पालन किया

**रामकृष्ण मठ की स्थापना.** रामकृष्ण की मृत्यु के बाद उनके शिष्य विवेकानंद ने काशीपुर के निकटद्वारा नगर में 1887 में रामकृष्ण मठ की स्थापना की इसी समय उनका नाम नरेंद्रनाथ के स्थान पर विवेकानंद रखा गया

**शिकागो सर्वधर्म सम्मेलन 1893.** सन्यास ग्रहण करने के बाद विवेकानंद ने सारे भारत की यात्रा की और कन्याकुमारी तक पहुंचे तो उनको खबर मिली कि अमेरिका के शिकागो नामक शहर में सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित हो रहा है तो वह इस सम्मेलन में भाग लेने के उत्सुक हुए जिनमें तीन कारण थे . वे सभी धर्म में एकता स्थापित करना चाहते थे

1893 में वे इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए शिकागो पहुंच गए और अपने प्रथम भाषण की पहली पंक्ति में कहा भाइयों और बहनों यह सुनकर तालिया से उनका भव्य स्वागत हुआ इस सम्मेलन में 10 से 12 भाषण देकर उन्होंने भारतीय संस्कृति के झंडा गढ़ दिए उनके भाषणों के बारे में दी न्यूयॉर्क हेराल्ड नामक पत्र में लिखा है कि धर्म की संसद में सबसे महान व्यक्ति विवेकानंद है उनका भाषण सुन लेने पर अनायासी या प्रश्न उठ खड़ा होता है कि ऐसे जानी देश को सुधारने के लिए अपना धर्म प्रचारक भेजने की बात कितनी बेवकूफी भरी है

**स्वामी विवेकानंद के आदर्श**

**1. मानव सेवा संबंधी विचार.**

**2. धार्मिक विचार.**

**3. राष्ट्रीयता का प्रसार.**

स्वामी विवेकानन्द के कार्यों का महत्व. उन्होंने भारतीय सभ्यता का धर्म का पुनरुत्थान कर हिंदू धर्म तथा संस्कृति पर बहुत बड़ा उपकार किया जिसके लिए हम हमेशा उनके कर्जदार रहेंगे उन्होंने भारतीय सभ्यता का संस्कृत का विदेश में भी प्रचार किया जिससे भारतीयों को अपनी संस्कृति पर गर्व होने लगा उनका कहना था कि भारतीय संस्कृति विश्व का कल्याण कर सकती है रविंद्र नाथ टैगोर ने कहा था कि यदि कोई भारत को समझना चाहता है तो उसे विवेकानन्द को पढ़ना चाहिए इसी प्रकार अरविंद ने उनके बारे में लिखा है कि पश्चिमी जगत में विवेकानन्द को जो सफलता मिली वहीं इस बात का प्रमाण है कि भारत केवल मृत्यु से बचने की ओर नहीं जगह है बल्कि विश्व विजय करके ही दम लगा पंडित नेहरू ने लिखा है कि एक बार इस हिंदू सन्यासी को देख लेने के बाद उसे और उसके संदेश को भुला देना मुश्किल है

**प्रश्न 6.. थियोसोफिकल सोसायटी तथा एनी बेसेंट पर एक निबंध लिखिए**

**Ans.** भारतीय महिलाओं के साथ-साथ अनेक ऐसी विदेशी महिलाएं भी रही हैं जिन्होंने हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था ऐसा ही एक नाम है श्रीमती एनी बेसेंट श्रीमती एनीमेशन एक आयरिश महिला थी उनका जन्म सन 1874 ईस्वी में आयरलैंड के एक गरीब परिवार में हुआ था विवाह के बाद उनका अपने पति से मनमुटाव हो गया जिसके चलते उनके संबंधों में विच्छेद हो गया इसके पश्चात इन्होंने थियोसोफिकल सोसायटी की सदस्यता ग्रहण कर ली उन्होंने अपने भाषणों तथा लिखो द्वारा इस समिति के सिद्धांतों और उद्देश्यों का खूब प्रचार प्रसार किया उन्होंने प्राय सभी धर्म की पुस्तक पढ़ी उनका गहन अध्ययन में मनन किया और कई पुस्तक भी लिखी सन 1893 ई में यह थियोसोफिकल सोसाइटी का प्रचार करने के लिए भारत ई इन्होंने मद्रास को अपना कार्य क्षेत्र चुनाव हिंदू धर्म एवं संस्कृति से प्रभावित होकर इन्होंने यही रहने का निश्चय कर लिया उन्हें भारत से इतना अधिक लगाव हो गया कि उन्होंने भारतीय समाज व हिंदू धर्म के विकास हेतु अपना शेष बचा संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया श्रीमती पेशेंट की हिंदू धर्म में आजाद श्रद्धा थी हिंदू धर्म के विषय में उनका कहना था विश्व में प्रचलित अनेक धर्म के 40 वर्षों के अध्ययन के बाद मुझे हिंदू धर्म के समान कोई भी धर्म इतना पूर्ण वैज्ञानिक दार्शनिक और आध्यात्मिक तौर पर नहीं जचता तुम्हें जितना इस धर्म का ज्ञान प्राप्त होगा उतना ही अधिक तुम इस धर्म से प्रेम करोगी

श्रीमती एनीमेशन ने भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने हेतु अथक प्रयास किया उन्होंने समाज में प्रचलित सती प्रथा बाल विवाह कन्या वध बहु विवाह दहेज प्रथा छुआछूत भेदभाव आदि का कड़े शब्दों में विरोध किया इन्होंने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया इन्होंने भारतीय जनता को जागरूक करने हेतु शिक्षा के विकास पर विशेष फल दिया तथा भारत में अनेक स्कूलों में कॉलेज स्थापित करने में विशेष योगदान दिया श्रीमती बेसन के

प्रयासों के खुलासा रूप ही सन 1898 इसी में बनारस में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की गई जहां हिंदू धर्म के साथ-साथ पाश्चात्य धर्म की भी शिक्षा दी जाती थी इन्होंने भारतीयों में राजनीतिक चेतना जागृत करने हेतु न्यू इंडिया तथा कॉमनवेल्थ नामक दो समाचार पत्रों का भी प्रकाशन किया इन्होंने स्वयं भी कहा है कि मैं तो एक नगाड़ा हूं जिसका कार्य हुए भारतीयों को जगाना है ताकि वह जागृत हो अपनी मातृभूमि के लिए कार्य कर सके श्रीमती बसंत भारतीय जनता पर हो रहे ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों से अत्यधिक दुखी थी फल स्वरूप वह सन 1914 में बाल गंगाधर तिलक द्वारा चलाए गए होमरूल आंदोलन में शामिल हो गई तथा बाद में मद्रास सितंबर 1916 ईस्वी में होमरूल लीग की अलग से एक शाखा का गठन किया अपने इस आंदोलन के माध्यम से उन्होंने भारतीयों के लिए होमरूल अर्थात् ग्रह शासन स्वशासन की मांग की परिणाम स्वरूप सन 1917 ईस्वी में अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया इसका समस्त भारत में जोरदार विरोध हुआ जिसे अंग्रेजी सरकार को उन्हें शीघ्र ही छोड़ना पड़ा सन 1917 ईस्वी में उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया इस पद पर रहकर भी उन्होंने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध अपनी जंग जारी रखी तथा निरंतर भारतीय जनता में जागृति पैदा करती रही अतः श्रीमती एनी बेसेंट ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जो योगदान दिया उसे कभी भी बुलाया नहीं जा सकता तथा देश को उनके इस अमूल्य योगदान के लिए सदैव उनका ऋणी रहना पड़ेगा स्वयं महात्मा गांधी ने भी उनके इस अमूल्य योगदान के लिए विषय में कहा है श्रीमती एनीमेशन ने भारत की जो गरिमा पूर्ण सेवाएं की है उनकी स्मृति तब तक संजीव होगी जब तक स्वयं भारत राष्ट्र के शरीर में प्राणों का संचार रहेगा

उपरोक्त वर्णन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का अतुल्य योगदान था भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नए केवल पुरुषों ने अपितु असंख्य महिलाओं ने भी अपने एडम में साहस का परिचय देते हुए अपने प्राणों की आहुति दी वे हर क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक हो या राजनीतिक धार्मिक हो या संस्कृति वे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चली उपरोक्त महिलाओं के अतिरिक्त भी अनेक असीम वीरांगनाएं हुई जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका अदा की

### थियोसोफिकल सोसायटी तथा श्रीमती एनीमेशन

श्रीमती एनीमेशन ने 1893 में इंग्लैंड से भारत आकर अपने को थियोसोफिकल सोसाइटी से संबंध कर इसके सिद्धांतों एवं लक्षण के प्रसार और प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया वह भी हिंदू धर्म एवं हिंदू संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित थी तथा वह व्यवहार्थ हिंदू हो गई थी उन्होंने भारत के सामाजिक सुधार राजनीतिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया भारत की आजादी के प्रति उनकी गहरी रुची थी इसलिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से अपने आप को संबंध कर उन्होंने तिलक जी के साथ होमरूल आंदोलन चलाया और 1916 ईस्वी में वह कांग्रेस की अध्यक्ष बनी

### थियोसोफिकल सोसायटी के सिद्धांत. इस प्रकार से

1. ईश्वर एक तथा आनंद असीम सर्वव्यापी और अजेय है उसकी पूजा का कोई प्रश्न ही नहीं उठाता है

2. वह हमारा उद्गम एवं अंत है सप्त ऋषि उसके मंत्री तथा देवता उनके नीचे हैं
3. सभी धर्म सत्य हैं परंतु हिंदू धर्म एवं बौद्ध धर्म पुरातन ज्ञान के भंडार हैं
4. सभी व्यक्ति समान हैं एवं जात-पात की भावना व्यर्थ हैं सभी में भ्रत्व की भावना होनी चाहिए
5. मनुष्य को विवेक पर आधारित चरित्र निर्माण को प्रमुखता देनी चाहिए तथा बाल विवाह और विधवा विवाह निषेध जैसी रुढ़िवादी प्रथाओं को समाप्त कर देना चाहिए।

### **प्रार्थना समाज**

1867 में मुंबई में केशव चंद्र सेन के सहयोग से आत्माराम पांडुरंग ने प्रार्थना समाज की स्थापना की वर्ष 1849 में महाराष्ट्र में परमहंस सभा के नाम से इस धार्मिक समाज का शुभारंभ हुआ यथार्थ में यह ब्रह्म समाज की ही एक शाखा थी लेकिन यह एक गुप्त समाज था जो मुख्यतः समाज सुधारक गतिविधियों पर ही अपना ध्यान केंद्रित करता था इसका प्रभाव क्षेत्र काफी सीमित था वर्ष 1860 में इस सभा का विघटन हो गया तथा इसी का परिवर्तित एवं संशोधित रूप 1867 में प्रार्थना समाज के रूप में सामने आया ब्रह्म समाज के सम्मान यह भी एक बौद्धिक एकतावादी संगठन था लेकिन इसमें धार्मिक सुधारों की अपेक्षा सामाजिक सुधारों पर अधिक बल दिया गया था प्रार्थना समाज के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे

1. जाति व्यवस्था को अस्वीकृत करना
2. स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देना
3. विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन देना.
4. लड़के और लड़की दोनों की विवाह करने की आयु में वृद्धि करना

प्रार्थना समाज ने राजा राममोहन राय द्वारा बंगाल में स्थापित ब्रह्म समाज से प्रेरणा ग्रहण की और व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में स्वस्थ सुधार लाने के लिए अपनी सारी शक्ति सामाजिक सुधार के प्रचार में अर्पित कर दी मुंबई के बाद धीरे-धीरे इसका विस्तार पुणे अहमदाबाद सतारा और अहमदनगर आदि स्थान में भी हुआ प्रार्थना समाज के प्रमुख नेताओं में आत्माराम पांडुरंग वासु देव बाबा जी नौरंगी रामकृष्ण गोपाल भंडारकर महादेव गोविंद रानडे वामन आबादी बोधन और नारायण गणेश चंद्रावरकर शामिल थे प्रार्थना समाज के मुख्य नियम और सिद्धांत निम्नलिखित थे

1. ईश्वर ही इस ब्रह्मांड का रचयिता है
2. ईश्वर की आराधना से ही इस संसार और दूसरे संसार में सुख प्राप्त हो सकता है
3. ईश्वर के प्रति प्रेम और श्रद्धा उसमें अन्य आस्था प्रेम श्रद्धा और आस्था की भावनाओं सहित आध्यात्मिक रूप से उसकी प्रार्थना और उसका कीर्तन ईश्वर को अच्छे लगाने वाले कार्यों को करना ही ईश्वर की सच्ची आराधना है
4. मूर्तियां अथवा अन्य मानव सृजित वस्तुओं की पूजा करना ईश्वर को आराधना का सच्चा मार्ग नहीं है

**5. ईश्वर अवतार नहीं लेता और कोई भी एक पुस्तक ऐसी नहीं है जिसे स्वयं ईश्वर ने रचा हो अथवा प्रकाशित किया हो अथवा जो पूर्णतया दोष रहित हो**

प्रार्थना समाज में रानाडे के नेतृत्व में जाति प्रथा विभाग बाल विवाह मूर्ति पूजा तथा हिंदू समाज की अन्य कृतियों के विरुद्ध आंदोलन किया इसने 19वीं शताब्दी के नावेदर्शक में नारी जागरण की योजनाओं का आरंभ किया आर्य महिला समाज की स्थापना 1882 ईस्वी में इन्हीं योजनाओं का फल है 1878 में प्रार्थना समाज द्वारा स्थापित पहला राष्ट्रीय विद्यालय जन शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहा वासुदेव बाबा जी नौरंगी बाल का आश्रम की स्थापना लाल शंकर उमाशंकर द्वारा पंदरपुर में 1875 में हुई यह वाला का आश्रम बाद में प्रार्थना समाज के संरक्षण में आ गया यह अपने ढंग की सर्वाधिक प्राचीन और बड़ी संस्था है और यह 1975 में अपनी एक शताब्दी पूरी कर चुकी है 1917 में प्रार्थना समाज ने राजा राममोहन राय अंग्रेजी विद्यालय की स्थापना की अब इसके संरक्षण में 10 से ज्यादा विद्यालय मुंबई और उनके आसपास चल रहे हैं

**प्रश्न 7. स्वामी दयानंद एक धार्मिक सुधारक थे व्याख्या करें**

**Ans.** स्वामी दयानंद सरस्वती मूल रूप से एक धार्मिक विचारक थे उन्होंने अपनी विभिन्न रचनाओं तथा प्रवचनों में जो भी सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक विचार प्रस्तुत किये उन सभी का आधार धार्मिक चिंतन ही था

स्वामी दयानंद चारों वेदों को स्वास्थ्य प्रमाण मानते थे चार वेद स्वयं ईश्वर के मुख से निकले शब्द है ईश्वर ब्रह्म परमात्मा सच्चिदानंद स्वरूप है ईश्वर के अनेक नाम तथा अनेक स्वरूप है ईश्वर के गुण धर्म स्वभाव पवित्र है वह सर्वज्ञ कर व्यापक सर्वशक्तिमान अजन्मा अमर अनंत निराकार दयाल न्यायकारी सर्व सृष्टि का करता धर्ता तथा हारता है वही सभी जीवों को क्रमानुसार सत्य न्याय से फल देने वाले लक्षणों से युक्त परमेश्वर है इसके विपरीत जीविका देश लाभ हानि सुख-दुख और ज्ञान आदि गुण युक्त अल्पज है

स्वामी दयानंद की धार्मिक विचारों का भिन्न शिक्षकों के अंतर्गत अध्ययन किया जा सकता है

**1. मूर्ति पूजा का खंडन..**

**2. वेदानुकूल आचरण का पक्ष.**

**3. वैशिक धर्म का समर्थन.**

**4. एकेश्वरवाद पर बाल.**

**5. अवतारवाद का विरोध.**

**6. धर्म व राजनीति.**

**7. धर्म की उदार व्याख्या.**

**8. आर्य समाज की स्थापना.**

**9. आश्रम व्यवस्था.**

**10. सत्यार्थ प्रकाश की रचना.**

**11. शुद्धिकरण.**

**12. नैतिक मूल्य.** स्वामी दयानंद ऐसे आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते थे जो की नैतिक मूल्यों पर आधारित हो उनका ऐसा मानना था कि नैतिक मूल्यों पर आधारित व्यक्ति ही एक आदर्श समाज के रचना कर सकते हैं इसलिए उन्होंने वैदिक मूल्य तथा शिष्टाचार या नियम संस्कार आदि के महत्व बोल दिया यदि इसअवधारणा को स्वीकार किया जाता है तो युवा वर्ग विशेष रूप से ब्रह्मचारी जीवन का पालन करते हुए अच्छे आचरण का पालन करेंगे फिर जीवन में सत्य निष्ठा अहिंसा इंद्रिय संयम शारीरिक में मानसिक पवित्रता ईश्वर निष्ठा का पालन करते हुए अपने शरीर मन तथा आत्मा को शुद्ध तथा उत्तम रखने का प्रयास करेंगे तथा उन्हें इसमें सफलता भी प्राप्त होगी कि न्याय का समर्थन तथा अन्य का विरोध करने में सक्षम होंगे

**निष्कर्ष.** स्वामी दयानंद सरस्वती के धर्म के संबंध में ऊपर वर्णित विचारों के अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि स्वामी दयानंद ने किसी नए धर्म का प्रचलन अथवा उसका प्रतिपादन नहीं किया वरन् उनकी मान्यता का आधार विशद्ध वेदांत ही रहा स्वामी की आत्मा परमात्मा तथा प्रकृति इन तीनों को स्वतंत्र रूप से स्वीकार करते थे परंतु बहुत से विद्वानों का ऐसा मानना है कि मुलाकात है वह अद्वैत के ही उपासक थे उनका मानना था कि वेदों में केवल धर्म की ही बातें नहीं हैं अपितु विज्ञान की भी कई सारी बातें हैं दयानंद यूरोप के विज्ञान पर तो फिदा थे किंतु यह सिद्ध करना चाहते थे कि उनका इसका मूल्य ही है यानी वैदिक पद्धति शुद्ध रूप से वैज्ञानिक है

#### **प्रश्न 8. अलीगढ़ आंदोलन का विस्तृत वर्णन कीजिए**

**Ans.** सर सैयद अहमद खान का जीवन परिचय. सर सैयद अहमद खान का जन्म 1817 ईस्वी में हुआ था उनके पूर्वज मुगल सामाज्य के निष्ठावान सेवक रहे थे ख्वाजा फरीदुद्दीन अहमद ईरानी सौदागरों के समाट परिवार से संबंधित थे जो सर सैयद अहमद खान के नाना लगते थे कि पहले कोलकाता मदरसा के अधीक्षक थे पर बाद में ईरान और वर्मा की दरबार में ब्रिटिश राज रहे इस प्रकार शायद अहमद खान को बचपन से ही ऐसा वातावरण मिला जहां भी पुरानी और साथ ही साथ नवीन संस्कृति की प्रवृत्तियों को ग्रहण कर सकते थे परंतु उनकी शिक्षा नियमित विषय नहीं हो पाई परिणाम स्वरूप उन्हें इस्लामी विषयों का ज्ञान काफी कम था लेकिन बाद में से उन्होंने अत्यंत श्रम के साथ पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान का अध्ययन किया पश्चात देशों ने भौतिक क्षेत्र में जो प्रगति की उससे भी काफी प्रभावित हुए सर सैयद अहमद खान 22 वर्ष के थे तो उसे समय उनके पिता का देहांत हो गया पूरे परिवार का बोध इन पर आ गया इसलिए 1849 में हुए आगरा के कमिशनर के दफ्तर में कलर बन गए और 1941 तक मुंशी के पद पर पहुंच गए 1846 से 1874 तक उन्होंने दिल्ली न्यायालय में कार्य किया 1857 की क्रांति के समय बिजनौर में कार्यरत थे लगभग 12 वर्ष के बाद इंग्लैंड गए जहां वह लगभग डेढ़ वर्ष तक रहे 1866 में वे सरकारी नौकरी से अलग हो गए और अलीगढ़ में खाकर बच गए 81 वर्ष की आयु में 1888 में उनका देहांत हो गया

**अलीगढ़ आंदोलन.** अभी तक सर सैयद अहमद खान का राजनीतिक और धार्मिक दृष्टिकोण प्रयाग सुधर गए राष्ट्रीय परंतु 1885 के बाद वे उदारता की नीति से दूर होने लगे उन्होंने राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा अब अंग्रेजों से मेल बढ़ाने की विशेष चिंता रहने लगी इस देश की प्राप्ति के लिए उन्होंने उदारता की इयूटी का बिल्कुल त्याग कर दिया अलीगढ़ विश्वविद्यालय के प्राचार्य बैंक में ब्रिटिशों के पक्ष में जाने और राष्ट्रीय भावना से दूर रखने में विशेष योगदान दिया सर सैयद अहमद खान को मुसलमान में चेतना भरने वाला कहा जाता है और किसी ने किसी तरह यह ठीक भी है इस तथ्य को यह को सदा माना जाएगा कि मुस्लिम समाज में आधुनिक स्वरूप और विद्या की प्रगति में सैयद अहमद खान का विशिष्ट योगदान था कट्टर मुसलमान की परवाह किए बगैर उन्होंने मुस्लिम समाज की सामाजिक तथा धार्मिक रूढ़ियों का लड़का के साथ खंडन किया तथा निर्भीकता के साथ आधुनिक शिक्षा का समर्थन किया और इस प्रकार मुस्लिम नवजागरण को उन्होंने काफी परेशान दिया उन्होंने अपने प्रतिभाशाली नेतृत्व से मुस्लिम समाज को बुराइयों की गहराई से बाहर निकाला उन्होंने समाज में आधुनिकता का प्रसाद किया जिससे विदेश की नाव राजनीति में प्रभावशाली ढंग से भाग ले सके शायद अहमद खान अंग्रेज शासकों के सदैव तथा शत्रुता को प्रेम में परिवर्तित कर दिया 1857 के बाद उच्च वर्ग की मुसलमान एक घोर निराशा में समाई हुई थी सर सैयद अहमद खान ने उनकी नई किरण प्रदान की उन्होंने जिस आंदोलन को शुरू किया उसमें भारत के मुसलमान अलीगढ़ के नेतृत्व में आ गए और उनके विरोधी काफी पीछे गए उन्होंने महसूस किया कि भारतीय मुसलमान का पतन नैतिक तथा आध्यात्मिक पाटन के कारण हुआ है इसलिए उन्होंने इस्लाम धर्म की एक विवेकपूर्ण व्याख्या की और भूख किया सर सैयद अहमद खान परंपरागत रूढ़िवादी वह संस्कारों का कड़ा विरोध किया मुसलमान को पतनशील अवस्था से उबालने के लिए यह जरूरी था की बुद्धि विरोधी विश्वास हूं और व्यवहारों की आलोचना की जाए और बेकार की परंपराओं और विश्वासों से जुड़े रहने की प्रवृत्ति का पारित किया जाए उन्होंने मुसलमान को बताया कि मुसलमान की सफलता का मुख्य साधन आधुनिक शिक्षा पर पूर्ण विचार प्रणाली और वैज्ञानिक दृष्टिकोण है शायद खाने मोमडन एंग्लो ओरिएंट एंड साइंटिफिक सोसायटी की स्थापना इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु की

**सर सैयद अहमद खान के बाद अलीगढ़ आंदोलन.** सर सैयद अहमद खान की मृत्यु के पश्चात अलीगढ़ आंदोलन का नेतृत्व मोहसिन कल मुल्क में किया लेकिन हिंदी उर्दू के मामले पर काफी मतभेद हो जाने से अलीगढ़ आंदोलन की राजनीतिक गतिविधियां 1905 तक लगभग बंद पड़ी रही बैंक की बात क्यों डोर मॉरिस अलीगढ़ आंदोलन का नेतृत्व करते रहे उन्होंने भी मुसलमान को राजनीतिक आंदोलन से दूर रहने की सलाह दी साथी के चेतावनी भी थी यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो उन्हें इन रिपन से दूर कर दिया जाएगा जो सरकार द्वारा कब तक उनको दी जा रही थी मोहसिन मेहंदी अली ने सैयद अहमद खान के गाने राज भक्ति और शिक्षा संबंधी सिद्धांतों का काफी प्रचार किया परिणाम स्वरूप अलीगढ़ विश्वविद्यालय के अलावा ढाका विश्वविद्यालय इस्लामिया कालेज तथा अन्य वैसी संस्थान शायद अहमद खान के दर्शन का केंद्र बन गई

**सर सैयद अहमद खान का धार्मिक दर्शन.** सर सैयद अहमद खान बदलते हुए समय के साथ चलना चाहते थे तथा इस्लाम की नई व्याख्या करने की आवश्यकता पड़ी तीन अन्य कर्म से यह व्याख्या काफी जरूरी थी पहले इसी

मिशनरियां मुस्लिम धर्म की कड़ी आलोचना करती थी इसी पांचों व्याख्यानों पुस्तकों पत्रिकाओं आदि के जरिए इस्लाम के खिलाफ विरोधी विचारों का प्रचार किया जाता था इस्लाम की रक्षा करना जरूरी बन गया उन्होंने यह सिद्ध करना चाहा कि कुरान की शिक्षा मुक्ति और प्रकृति के बिल्कुल अनुरूप है कुरान के संबंध में उन्होंने अपने निम्नलिखित विचार रख दिए हैं

1. हदीस का हुक्म मानने की मजबूरी सिफ मजा भी मामले में है सांसारिक मामलों में वह वैकल्पिक है
2. हदीस में पैगंबर मोहम्मद की सूक्तियां हैं जैसे की रवियों ने लिपिबद की है कहां तक रवियों के चरित्र और उनकी बात विश्वास किया जा सकता है यह शोध का विषय है इसलिए उनकी आलोचना की जा सकती है और ज्ञान बिन करने की पश्चात ही उन्हें मंजूर किया जा सकता है
3. मनुष्य की इच्छा शक्ति अनंत है
4. कुरान की शिक्षा ईश्वरीय और चिरंतन है इसलिए यह तोतिहीन दो सहित है शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियों से हम उन पर चलने के लिए मजबूर हैं दूसरे शब्दों में संपूर्ण विश्व का निर्माता ईश्वर ही है और वही कुरान का रचयिता है इसलिए कुरान किसी भी रूप में वास्तविक स्थिति से भिन्न नहीं

**सर अहमद खान का शैक्षिक दर्शन.** शाहिद खान मुस्लिम अहमियत और सोने के तरीकों में जी क्रांति का सूत्रपात किया था उनकी शिक्षा संबंधी विचारों ने इसमें और भी गति लाती वे चाहते थे कि मुस्लिम समाज में व्यक्तिगत तथा सामूहिक तौर पर परिवर्तन और क्रांति आए अपने धार्मिक तत्वों के प्रचार प्रसार के लिए उन्होंने मुस्लिम शिक्षा की एक योजना बनाई जो मुसलमान की राजनीतिक भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा करें सरकारी संस्थानों में पढ़ने जाने वाली धर्मनिरपेक्ष शिक्षा से वह संतुष्ट थे क्योंकि इससे इस्लाम कमजोर हो जा रहा था इस शिक्षा में चारित्रिक सुधार एवं नैतिक प्रगती के तत्व नहीं थे कि मुस्लिम मद्रास एवं सरकारी कॉलेज की शिक्षा पद्धति से काफी उदासीन थे मद्रास के बारे में उन्होंने लिखा मुसलमान ने जौनपुर कानपुर अलीगढ़ सहारनपुर दिल्ली तथा लाहौर से पुरानी तालीम की कुछ संस्था में खुली हैं पर मैं ईमानदारी के साथ कहता हूँ कि मैं बिल्कुल बेकार है मद्रास में मुस्लिम धर्मशास्त्र भाषा कक्षा प्राकृतिक विज्ञान गणित ज्योतिष आदि का अध्ययन कराया जाता था

### **सैयद खान शिक्षा के उद्देश्यों को इस प्रकार स्पष्ट किया**

1. आधुनिक ज्ञान विज्ञान का गहराई से अध्ययन प्रवेश कर की वृद्धि
2. आवासीय शिक्षा संस्थानों का निर्माण काफी छात्रों के सामूहिक चरित्र का मजबूत निर्माण हो सके
3. धार्मिक तत्वों का ज्ञान करना ताकि धर्म में विश्वास जगह तथा परंपरा का बुद्धि से मेल करना ताकि विवेक की कसौटी पर रखकर घटिया परंपरा को छोड़ने या त्यागने का ज्ञान है

**सर सैयद अहमद खान का सामाजिक चिंतन.** साजिद खान ने सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी योगदान दिया उन्होंने जिहाद गुलाम शिवपुरी बहू का कथा युद्ध में बिंदी आदि समस्याओं को भीष्म रूप से ग्रहण किया उन्होंने प्रश्नों पर

इस्लाम की राय को युक्ति युक्त नियम के अनुकूल बताया इसी प्रकार युद्ध में पकड़े गए बांधों को मारना दुकान की औरतों को गुलाम बनाना जरूरी नहीं है शायद खाने इसी जगत और अंग्रेजों का सहयोग पाने के लिए मुसलमान को यह संदेश दिया उन्होंने मुसलमान और इसी शासको के मध्य निर्मित भाई को काटने का पूर्ण वेतन किया उन्होंने ईसाई धर्म पर प्रत्यक्ष क्रमण नहीं किया बल्कि मुसलमान को सलाह दी कि वे ईसाइयों के साथ सामाजिक चल रही मनों में विशेष कर खान-पान में अपनी पूर्वाग्रह दूर करें

शाहिद खान की क्रांतिकारी बातों को मुस्लिम समाज के कट्टर पत्तों ने पसंद नहीं किया और उन्हें काफी बेहतर उनका कोई हाथ में निकले पत्र पत्रिकाओं व्याख्यानों और पुस्तकों के जरिए उनका काफी विरोध भी किया गया लेकिन शायद हां जैसे भारत में अपने सुधार कार्यों को लगातार जारी रखा उन्होंने हिंदू स्थान की दो प्रमुख जाते हैं मुसलमान की आपसी एकता पर काफी बल दिया

#### **प्रश्न 9. दलितोत्थान आंदोलन में डॉ भीमराव अंबेडकर की भूमिका पर प्रकाश डालिए**

**Ans** अप्रैल 1893 इसी को डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का जन्म भीमाबाई वैद्यता राम जी बाहर के घर 2497 दिखाएं हुआ बाड़मेर ग्राम के रहने वाले थे भीमराव ने अपने ब्राह्मण शिक्षक अंबेडकर से प्रभावित होकर अपने नाम के साथ अंबेडकर छोड़ दिया था डॉ अंबेडकर आधुनिक समय में दलितों के सर प्रमुख और सर्वाधिक प्रतिभावान प्रखर नेता तथा प्रमुखता थी उन्होंने शताब्दी के तीसरे दशक में राजनीति में प्रवेश किया डॉ अंबेडकर दलित के मूलभूत मानवीय अधिकारों तथा राजनीतिक मांगों के लिए संघर्ष करने वाले अग्रणी यूनिवर्सिटी जो स्वयं दलित वर्ग में जन्मे थे तथा अपने अध्ययन और अपनी व्यवसाय के बल पर दलितों के सर्वोपरि नेता का पद हासिल करने में सफल हुए वह समाज सुधारक थे परंतु उपकार के रूप में नहीं अधिकार के रूप में शुरू में उन्होंने हिंदू समाज में समायोजन का प्रयास किया अंत में निराश होकर उसे प्रथक होने का उन्होंने हिंदू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लिया वह इसके लिए अस्पर्शों को भी प्रेरित किया

#### **दलितोत्थान आंदोलन में डॉक्टर अंबेडकर की भूमिका**

1. दलितों में स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की भावना जागृत करने का निवृत्ति प्रयास.
2. संपूर्ण देश के दलितों के नागरिक अधिकारों के लिए अभियान छेड़ने.
3. हिंदू धर्म को सामाजिक समानता का धर्म बनाने पर जोर।
4. जाति प्रथा में उन्मूलन गए पर्यटक दलितों को जीवन शैली में सुधार के प्रियतम
5. सृष्टता उन्मूलन व समान नागरिकता की स्थापना के साथ-साथ दलितों के लिए अलग निर्णायक मंडल की मांग।
6. दलितों की समस्या को समाज सुधार के बजाय राजनीतिक प्रश्न के रूप में देखना.
7. अस्पृश्य पको हिंदू समाज में आत्मसात करने के लिए वर्ण व्यवस्था के बलिदान पर बाल.
8. दलितों को आरक्षण में अन्य अनेक तरह की सुविधा और अधिकार डलवाने की भूमिकाओं का निर्वहन करना
9. अस्पर्शों को सामूहिक रूप से बौद्ध धर्म ग्रहण करने के लिए आंदोलन छोड़ने के लिए प्रेरित करना

**10. स्वतंत्र भारत के संविधान में दलितों के उत्थान के लिए अनेक तरह की प्रावधानों को समाहित करना।**

**11. यांत्रिक प्रौद्योगिकी राजकीय समाजवादी विकेंद्रीकृत संसदीय सरकार का जोरदार समर्थन।**

**12. हिंदू धर्म तथा हिंदू धर्मवालों से निराश होकर अस्पृश्य को हिंदू धर्म त्याग कर बौद्ध धर्म अपनाने के लिए प्रेरित करना।**

**प्रश्न 10. जाति व्यवस्था पर एक निबंध लिखिए।**

**Ans .** जातिवाद एवं सामाजिक समस्या है जो जाति व्यवस्था से संबंधित होती है जातिवाद के कारण व्यक्ति व्यक्ति के बीच धनादेश तथा प्रतिस्पर्धा का जन्म होता है जातिवाद के कारण वृद्धि केवल अपनी ही जाति के सदस्यों की हेतु को सबसे अधिक महत्व देता है उनके सामने यदि या समाज के हितों को कोई बेहतर नहीं देता आधुनिक युग में सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन के कारण जाति व्यवस्था में भी परिवर्तन हो रहे हैं नगरों में जातिवाद के कुछ चिन्ह दिखाई दे रहे हैं प्रत्येक जाति ने अपने-अपने संगठनों का निर्माण किया है और इन संगठनों के कार्यालय अधिकतर नगरों में पाए जाते हैं कई बार नगरों में जाती है पंचायत की होती है जिनमें केवल अपनी ही जाति से संबंधित फैसले दिए जाते हैं किसी भी सामाजिक बुराई के बारे में इन पंचायत में अन्य जातियों से संबंधित लाभकारी कदम उठाने का कोई भी फैसला नहीं किया जाता उससे वह कमजोर होती जाती है परंतु कुछ जातियां संगठन उसकी दवाई पिलाकर केवल जीवित रखते हैं लेकिन जैसे ही चुनाव आते हैं राजनीतिक दल उन पर कमजोर जाति प्रथा को टॉनिक बनाकर फिर से स्वस्थ और दुरुस्त बना देते हैं वे अपनी जाति के सामने देश के हितों को भी सुधरने नहीं रखती अर्थात् देश के मुकाबले में जाति को प्राथमिकता देती है इसी कारण यह समस्या पूरे समाज की समस्या बनती जा रही है

**जातिवाद की परिभाषा एवं अर्थ**

**1. डॉ कैलाश नाथ के अनुसार. जातिवाद या जाति भक्ति के व्यक्तियों की वह भावना है जो देश या समाज के सामान्य हितों का ख्याल में रखते हुए केवल अपनी जाति के सदस्यों के उत्थान करती है एकता और जाति की सामाजिक प्रस्तुति को सुदृढ़ करने के लिए प्रेरित करती हो**

**2. डॉक्टर और प्रसाद के अनुसार. जातिवाद राजनीति में रूपांतरित जाति के प्रति निष्ठा है**

**3. काका कालेलकर के शब्दों में. जातिवाद एक अवांछित आंधी तथा सर्वोच्च समूह भक्ति है जो कि न्याय और तृतीय समानता और विश्व बंधुत्व की अपेक्षा करती है**

**जातिवाद की विशेषताएं.**

**1. जातिवाद में व्यक्ति के मन की इच्छाओं को क्रियात्मक रूप दिया जाता है**

**2. जातिवाद के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तिगत गुना तथा उसकी योग्यता को कम महत्व दिया जाता है**

**3. जातिवाद में व्यक्ति की आंतरिक भावना तथा व्यवहार दोनों को प्रभावित होते हैं**

4. जातिवाद एक संकुचित भावना है क्योंकि इसमें केवल अपने ही जाति का कल्याण करने की ही चिंता रहती है और समाज के सामान्य हितों की अपेक्षा की जाती है
5. जातिवाद से प्रभावित व्यक्ति अपनी जाति के सदस्यों के कल्याण के सामने पूरे समाज की अपेक्षा करता है इसलिए यह एक समाज विरोधी भावना है
6. समाज में पैदा होने वाले अधिकतर संघर्षों का कारण जातिवादी होता है  
जातिवाद के विकास के कारक या कारण.

निम्नलिखित कारकों की योगदान के कारण ही जातिवाद का विकास होता है।

**1. विवाह से संबंधित विभिन्न प्रबंध।**

**2. नगरों का विकास या नगरीकरण।**

**3. औद्योगिक विकास।**

**4. संस्कृतिकरण।** संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में निम्न जाति अपने से उच्च जाति के व्यवहारों को ग्रहण कर लेती है और जो जाती संस्कृतिकरण करती है वह अपने आप को अन्य निम्न जातियों से ऊंचा करने लगती है और उसे जाति के अंदर जातिवाद की भावना बढ़ने लगती है उच्च जातियां संस्कृतिकरण करने वाली जातियों के व्यवहारों को मानता नहीं देती परिणाम तो दोनों जातियों ने आपसी पत्रिका पड़ती है जिससे जातिवाद की भावनाओं को बल मिलता है कभी-कभी तो यह इस तरह से के जातिवाद से आपसी संघर्ष भी हो जाते हैं।

**5. विभिन्न जाति संगठनों का विकास।**

**6. यातायात के संसार के साधनों में वृद्धि।**

**7. अपनी सामाजिक स्थिति को ऊंचा उठाकर।**

**8. जजमानी प्रथा के समाप्त होने से।** पहले जजमानी प्रथा के अंतर्गत एक जाति दूसरी जाति के लिए आवश्यक सेवाएं प्रदान करती थी और उसके बदले में अपने जजमान से आवश्यक वस्तुएं प्राप्त करती थी इस प्रथा में एक जाति का दूसरी जाति के साथ आदान प्रदान करता रहता था जज्बानी प्रथा के समाप्त होने से विभिन्न जातियों का सामाजिक तथा आर्थिक संपर्क समाप्त हो गया और उन्होंने अपने हितों के लिए संगठित होकर संघर्ष करना शुरू कर दिया इस प्रकार जजमानी प्रथा के समाप्त होने से जातिवाद का जन्म हुआ।

**9. राजनीति के कारण।** आज के युग में भारतीय राजनीतिक भी जातिवाद को बढ़ावा दे रही है छोटे से छोटे चुनाव से लेकर संसद के चुनाव तक जाति आधार पर राजनीतिक दल अपनी उम्मीदवार खड़े करते हैं और जाती है आधार पर ही वोट मांगी जाती है अतः राजनीतिक में भी उसी जाति को महत्व दिया जाता है जो संगठित होती है तथा जिसमें जातिवाद की भावना ज्यादा होती है इसी कारण भारतीय राजनीति भी जातिवाद को बढ़ावा देने का कार्य करती है जातिवाद के परिणाम दुष्परिणाम व समाज पर पड़ने वाले प्रभाव या दोष जातिवाद के दोष में प्रथा है इसके प्रमुख दोष को निम्नलिखित हैं।

- जातिवाद एक प्रजातंत्र विरोधी प्रथम है
- जातिवाद के कारण नैतिक पतन.
- जातिवाद व्यक्ति की गतिशीलता में बाधक हैं।
- विभिन्न सामाजिक समस्याओं का उदय.
- औद्योगिक कुशलता में बाधक.
- राष्ट्रीयता के विकास में बाधा.

#### 7 सामाजिक प्रभाव.

- जातिवाद के कारण भाई भतीजाबाद को प्रोत्साहन मिलता है

#### जातिवाद के निराकरण के उपाय.

- अंतरजातीय विवाह को बढ़ावा देकर.
- उचित शिक्षा.
- जातीय संगठनों के बनने पर रोक.
- जातिवाद के आधार पर चलने वाली राजनीति पर रोक.
- जाति प्रथा की समाप्ति.
- आर्थिक और संस्कृत सामान्य.
- जाति शब्द का काम से कम प्रयोग.
- नहीं प्रकाश के सामाजिक व सांस्कृतिक संगठन
- प्रभावशाली व्यावहारिक कानून का बनाना.

#### प्रश्न 11. भारत में ब्रिटिश राज्य की देन पर आलोचनात्मक टिप्पणी करें

**Ans.** भारत में अंग्रेजों ने अपना सामाज्य स्थापित करने के लिए जिस तरफ सामाज्यवादी विचारधारा को अपनाया था उसके अपने निर्धारित तथा पूर्व नियोजित उद्देश्य थे उन्होंने अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनेक प्रकार की नीतियों का सहारा लिया था अंग्रेज इस बात से अच्छी तरह वाकिफ थे की तलवार के बल पर अधिक दिनों तक उपनिवेशों की जनता को गुलाम नहीं बनाया जा सकता है सफाई गुलामी के लिए अपने अधीन लोगों पर एक विचारधारा कायम करनी बहुत आवश्यक होती है विचारधारा वास्तव में एक वैचारिक तथा बौद्धिक हथियार होता है जो बगैर रक्त बहा बड़े-बड़े सामाज्य स्थापित करने में सक्षम होता है इस हथियार का प्रयोग किसी व्यवस्था को नैतिक तथा वैचारिक आधार प्रदान करने के लिए किया जाता है ब्रिटिश सरकार ने भी भारत में कंपनी के शासन को वैधता प्रदान करने के लिए कुछ इसी तरह के प्रयास किए थे

भारत में ब्रिटिश सामाज्यवाद की शुरुआत तथा स्थापना व्यापारिक गतिविधियों के संचालन से हुई थी इस समय तक इंग्लैंड में एक ऐसा वर्ग तैयार हो चुका था जो उपनिवेशन से प्राप्त आर्थिक संसाधनों के कारण समाज में अपनी

विशेष पहचान बन चुका था वह अब बाहरी व्यापारी गतिविधियों पर अधिक से अधिक नियंत्रण स्थापित करना चाहते थे अब उन में व्यापारिक विकास के साथ-साथ राजनीतिक महत्व कक्षा भी उत्पन्न हो चुकी थी इस दुनिया कंपनी ने जिस समय भारत में प्रवेश किया था उसे समय तक उनके पास काफी उपनिवेश आ चुके थे परंतु इस व्यापारिक वर्ग की जिजासा भारत में अधिक थी इसका प्रमुख कारण यह था कि यहां से कच्चा माल आसानी से प्राप्त किया जा सकता था तथा तैयार माल को यहां की मंदिरों में बेचना सरल था इसलिए इस वर्ग में अपनी सरकार पर दबाव बनाया कि वह भारत में ज्यादा से ज्यादा औपनिवेशिक विस्तार करें इस ओपनिंग की विस्तार में इसैमिनियों द्वारा भी जमकर सहयोग किया गया 1765 में बंगाल बिहार में उड़ीसा की दिवाली प्राप्त होने के बाद भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद में तेजी से अपने पांव फैलने शुरू कर दिए सहायक संघि लिफ्ट का सिद्धांत तथा युद्ध के माध्यम से 1857 तक लगभग संपूर्ण भारत उनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण आ चुका था अब उनका असली कल अपने साम्राज्य को औचित्य अथवा वैधता प्रदान करना था

### **ब्रिटिश साम्राज्यवादी विचारधारा के सिद्धांत.**

भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवादी विचारधारा के विभिन्न सिद्धांतों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है

**1. राजनीतिक सिद्धांत.** भारत में औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना के बाद वहां के बुद्धि की विभाग ने इस शासन की व्यवस्था या औचित्य के पक्ष में अनेक तर्क दिए जैसे

1. अंग्रेजों के भारत आगमन से पहले भारतीयों को किसी प्रकार का कोई राजनीतिक ज्ञान नहीं था

2. भारतीयों को लोकतांत्रिक शासन प्रणाली से अवगत करवाने वाले अंग्रेजी थे

3. भारत में न्यायिक शासन की स्थापना करने वाले भी अंग्रेजी से उनके शासन का आधार न्याय था जिसमें सबको समान समझा जाता था

4. भारत को राजनीतिक रूप से एक इकाई में बनने वाली भी अंग्रेजी से उनके अनुसार यदि अंग्रेज भारत में शासन नहीं करते तो भारत जैसी कोई चीज आज भी नहीं होती

5. भारत में आम लोगों को शासन में भागीदारी देने वाले भी अंग्रेजी थे

6. मताधिकार का अधिकार भी भारतीयों को अंग्रेजों ने ही प्रदान किया था

7. भारत में कानून का शासन स्थापित करने वाली भी अंग्रेजी थे

**2. सांस्कृतिक और आर्थिक सिद्धांत.** भारत में औपनिवेशिक शासन स्थापित होने से ही पापा निवेशिकों इतिहासकार इस बात का जोर जोर से प्रसार कर रहे थे कि वे असंभव को शब्द बनाने के लिए भारत में आए हैं इस विषय में उनके अर्थ

1. अंग्रेजों के आगमन से पहले भारतीय अशुद्ध तथा बार-बार जीवन जी रहे थे

2. भारतीय समाज अंधविश्वासों तथा सामाजिक कुरीतियों के बंधन में जगड़ा हुआ था

3. जाति प्रथा छुआँझूत पर्दा प्रथा कन्या वध बाल विवाह सती प्रथा जैसी बुराइयों से छुटकारा दिलवाने वाले में अंग्रेज ही थे
  4. अज्ञान में अशिक्षित समाज में शिक्षा की रोशनी फैलाने वाले भी अंग्रेजी थे
  5. भारत में स्त्री शिक्षा की शुरुआत करने वाले भी अंग्रेजी से औरतों को पर्दे तथा घरों से बाहर निकलने में अंग्रेजों की भूमिका महत्वपूर्ण थी
  6. भारतीय समाज में समानता स्वतंत्रता तथा बंधुत्व की भावना पैदा करने वाले भी अंग्रेजी थे
  7. रेल डाक व्यापार का संचालन विभाग भारत में अंग्रेजों ने ही किया था
  8. आधुनिक उद्योगों की स्थापना भारत में अंग्रेजी शासन के बिना नहीं हो सकती थी
  9. वाणिज्यिक में नगरी फसलों को भी अंग्रेजों ने ही प्रोत्साहन किया था
  10. भारत में रोजगार के अवसर बनाने वाले भी अंग्रेजी थे
  11. कृत्रिम सिंचाई की साधन भी भारत में अंग्रेजों ने ही उपलब्ध करवाए थे
  12. कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में बदलना भी अंग्रेजी शासन का ही काम था
- निष्कर्ष.** उपरोक्तियों के माध्यम से औपनिवेशिक सट्टा तथा इतिहासकार हाथियों को यह बताना चाहते थे कि बिना अंग्रेजी शासन में अपना सामाजिक तथा आर्थिक विकास नहीं कर सकते हैं इसलिए उन्हें अंग्रेजी शासन के बने रहने की कल्पना करनी चाहिए उसके साथ उनका यह भी माना था कि जिस दिन भारतीय सभ्य को जाएंगे तथा उन्हें शासन का जान हो जाएगा उसे दिन भी से ही भारत छोड़कर चले गए सिर्फ ईश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए भारत में शासन कर रहे हैं क्योंकि ईश्वर ने सर्वप्रथम उन्हें शब्द बनाए तथा आदेश दिया कि जो अब सारी दुनिया को शारदे बना परंतु व्हाट्सएप में यह एक तरफ का साम्राज्यवादी विचार है जिनकी भारतीय राष्ट्रपतियों ने जमकर आलोचना की है